TENDER HEART HIGH SCHOOL, SECTOR 33-B, CHD.

DATE- CLASS - V

SUBJECT- HINDI LITERATURE PAGE-1

SUBJECT TEACHER - Ms. ROMA

Answer Key

पाठ-3 (चूदड़ साईं)

संक्षेप में -

(क) "साईं ! ओ साईं कहकर मोहन ने पुकारा।

(ख) मोहन द्वारा दी गई साग - रोटी खाकर साईं के चेहरे पर तृप्ति के भाव आते थे।

(ग) साईं ने मोहन के घर की ओर जाना इस लिए छोड़ दिया था क्योंकि जब मोहन के पिता उसे साईं के साथ देखते हैं तो उसे डाँटते हैं।

(घ) नटखट लड़का साईं को परेशान करने के लिए उसका चूदड़ लेकर भागा।

विस्तार से :-

(क) साईं एक वैरागी था। उसकी मोहन से मित्रता हो गई थी। जब भी साईं मोहन के पास जाता तो वह साईं को खाने के लिए साग - रोटी देता था। खाना खाकर साईं मोहन से खूब बातें करता। इसलिए साईं रोज़ मोहन के पास आता था।

(ख) जब नटखट लड़का साईं के चूदड़ लेकर भागता है तो मोहन के पिता उसे पकड़कर पीटते हैं। यह देखकर साईं उस लड़के को बचाते हुए कहता है कि

Scanned with CamScanner

मत मारो, चोट आती होगी। साईं बच्चों में बाल - स्वरूप भगवान को देखता है। इसी भाव के कारण साईं नटखट लड़के को बचाता है।

(ख) साईं एक संन्यासी था। उसे बच्चों से प्रेम था। वे बच्चों में भगवान का रूप देखता था। उसकी मोहन के साथ मित्रता थी। जब मोहन उसे खाने के लिए साग - रोटी देता तो वह भी दस वर्ष का बालक बन जाता था। साईं में दया का भाव था। इन्हीं गुणों के कारण मोहन के पिता ने उसे गुदड़ी का लाल कहा था।

(घ) इस पंक्ति का भाव यह है कि गरीब और अमीर में सिर्फ भगवान ही कोई भेद नहीं रखते। वे ईश्वर ही हैं जो गरीबों पर अपनी कृपा दृष्टि रखते हैं क्योंकि वह तो निःस्वार्थ प्रेम और भावना के भूखे होते हैं।

Last page.

Scanned with CamScanner